ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P) ICV
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

1857 की क्रांति में आदिवासियों की भूमिका (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)

डॉ प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर [1]

[*1] डॉ प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर, इतिहास विभाग गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

DOI: 10.29121/granthaalayah.v5.i8.2017.6314

सारांश

ब्रिटिश हुकूमत ने भारत में पैर जमाने के साथ-साथ अमानवीय अत्याचार आरंभ किये, जिससे छत्तीसगढ़ भी अछूता नहीं रहा। राजनीतिक अत्याचारों के साथ धार्मिक अत्याचार भी आरंभ हो गये। ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों के चेयरमेन मैग्लीज ने 1857 में हाउस ऑफ कामन्स में कहा था' ईश्वर ने भारत का यह शान से पूर्ण राज्य इंग्लैण्ड को इसलिए सौंपा है. ताकि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसा मसीह की विजय का झंडा लहराने लगे।

Cite This Article: डॉ प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर. (2017). "1857 की क्रांति में आदिवासियों की भूमिका (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(8), 288-290. 10.29121/granthaalayah.v5.i8.2017.6314.

1. भूमिका

ब्रिटिश हुकूमत ने भारत में पैर जमाने के साथ-साथ अमानवीय अत्याचार आरंभ किये, जिससे छत्तीसगढ़ भी अछूता नहीं रहा। राजनीतिक अत्याचारों के साथ धार्मिक अत्याचार भी आरंभ हो गये। ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों के चेयरमेन मैग्लीज ने 1857 में हाउस ऑफ कामन्स में कहा था' ईश्वर ने भारत का यह शान से पूर्ण राज्य इंग्लैण्ड को इसलिए सौंपा है. ताकि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसा मसीह की विजय का झंडा लहराने लगे।

छत्तीसगढ़ अंचल में असंतोष व विद्रोह की छुटपुट घटनाएँ वस्तुत: 1857 के पूर्व ही दिखाई देती है। इस दृष्टि से अपने दामन में पिछड़ने का दाग लगाये हुए आदिवासी क्षेत्र छत्तीसगढ़ में परोक्ष रूप से 1833 में राष्ट्रीय भावनाएँ जन्म लेने लगी थी। रायगढ़ रिसासत के जुझार सिंह के पुत्र देवनाथ सिंह ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह किया पर सफलता नहीं मिली।

ब्रिटिश भारत के इतिहास में 1857 का वर्ष एक महत्वपूर्ण वर्ष है, जिसमें अंग्रेजों के विरुद्ध छुटकारा पाने का एक सम्मिलित प्रयास हुआ। जिसकी असफलता ने भारत की प्राचीनता का अंत कर दिया और वह आधुनिक युग में प्रविष्ट हुआ। देश का नेतृत्व सामतों के हाथों से निकलकर पाश्चात्य विचारधाराओं से ओत-प्रोत शिक्षित युवा पीढ़ी के हाथों में आ गया। अब विरोध राजनीतिक हो गया। कम्पनी की निरंकुशता का अंत हुआ और उसके स्थान पर देश में ब्रिटिश संसद के शासन की स्थापना हुई जिसने बदलते हुए उत्तरदागी सरकार का स्वरूप धारण किया जिसकी परिणिति भारत को स्वतंत्रता मिली।

यह सर्वविदित है कि 1857 की क्रांतिवीर युवा सैनिक मंगल पाण्डे के विद्रोह से शुरू हुई और छत्तीसगढ़ भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा। सन 1854 में जब छत्तीसगढ़ का क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बनाया गया तब वहां किसी भी प्रकार के विद्रोह की सूचना नहीं मिली, किन्तु बाद में बिटिश अधिकारियों के गलत नीतियों के कारण आदिवासी बहुल यह शांतिमय क्षेत्र आंदोलित हो उठा।

छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह: -

राम राय की मृत्यु के बाद वीर नारायण सिंह सोनाखान के जमींदार बने, वे जनहित के कार्यों में अभिरूचि रखते थे इसलिए वे अपनी प्रजा में लोकप्रिय हो गये थे। जब वीर नारायण सिंह यहां के जमींदार बने उस समय उनकी उम्र पैंतीस वर्ष थी। सोनाखान के विरूद्ध अंग्रेजी प्रशासन हमेशा ही कलुषित विचार रखता था और किसी न किसी बहाने इस आदिवासी जमींदारी पर पूर्ण अधिपत्य कर उसे दण्डित करने हेतु प्रतीक्षारत् था। यह अवसर अंग्रेजों को शीघ्र ही मिल गया। 1856 में सोनाखान में दुर्भाग्यवश भीषण अकाल पड़ा लोग भूंखों मरने लगे। लोगों की जान रक्षा के लिए नारायण सिंह ने माखन नामक एक व्यापारी के गोदाम का अनाज किसानों में वितरित कर दिया। व्यापारी की रिपोर्ट पर डिप्टी कमीश्नर ने वीरनारायण सिंह पर डकैती का आरोप लगाकर रायपुर जेल में डाल दिया। उसी समय 1857 की घटना घटित हुई। 20 अगस्त 1857 को नारायण सिंह रायपुर जेल से 10 महीने 4 दिन रहने के बाद भाग निकले और 500 सैनिकों की एक सेना तैयार की। इधन नेपीयर के साथ लेफ्टिनेंट स्मिथ एक बड़ी सेना लेकर जमींदार की गिरफ्तारी हेतु सोनाखान गये। वहां कई व्यक्तियों के घर की तलाशी ली गई ओर बहुत सारे संदेहास्प्रद दस्तावेज पकड़े गये। स्मिथ जब देवरी सोनाखान के लिए कूच किया तो देवरी के जमींदार ने उनका मार्गदर्शन कराया और सूचित किया कि कहाँ-कहाँ नारायण सिंह ने सैनिक तैयारियों की है। सोनाखान से दो फर्लांग पहले नाले के समीप नारायण सिंह ने स्मिथ की सेना पर आक्रमण किया। नारायण सिंह के अद्भुत शौर्य के साथ गुरिल्ला युद्ध प्रणाली से स्मिथ की सेना पराजित होती दिखाई दी पर बाहरी सहायता से स्मिथ उसे पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। स्मिथ को भटगांव, देवरी तथा बिलाईगढ़ के जमींदारों से सहयोग मिला। स्मिथ ने पूरे गांव में आग लगवा दी। पूरा गांव जल गया। इसके पश्चात् नारायण सिंह अपने एक समर्थक के साथ आत्म समर्पण किया। वीर नारायण सिंह पर मुकदमा चलाया गया 10 दिसम्बर 1857 को आदिवासियों के मसीहा वीर नारायण सिंह को जय स्तंभ चैक पर फांसी दे दी गई। इस प्रकार देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में छत्तीसगढ़ का प्रथम सेनानी शहीद हो गया।

मेग्जीन लश्कर हनुमान सिंह का पराक्रम: -

वीर नारायण सिंह की शहादत के बाद अंग्रेज आश्वस्त हो चुके थे. किन्तु ब्रिटिश सेना के तीसरी टुकड़ी के सार्जेण्ट मेजर सिडवेल की 18 जनवरी 1858 की संध्या 7 बजकर 30 मिनट में हत्या कर दी गई। यह मेग्जीन लश्कर हनुमान सिंह द्वारा की गई कार्यवाही का परिणाम था और एक प्रकार से नारायण सिंह को दी गई फांसी की एक प्रतिक्रिया भी थी। सरकारी सूचना के अनुसार हनुमान सिंह तलवार, छुरा आदि हथियारों से सुसज्जित था। सार्जेण्ट मेजर सिडवेल पर जो कमरे में अकेला बैठा था पीछे से उस पर घातक हमला किया गया इसमें सिडवेल की मृत्यु हो गई। सार्जेण्ड मेजर को मारकर हनुमान सिंह अपने साथियों को ऊँची आवाज में क्रांति में शामिल होने का आह्वान करते हुए पुलिस शिविर की ओर से भागा। उनके साथ दो और सिपाही बन्दूक लिए हुए थे। उसे पकड़ने के लिए सरकारी टुकडी रातभर गोलियों चलाकर विप्लवकारियों को आंतकित करने का प्रयास करती रही। लेफ्टिनेंट स्मिथ तथा रिबट ने अन्य प्रकार से प्रलोभन देकर विप्लवकारियों को अपनी ओर मिलाने का प्रयास करते रहे किन्तु हनुमान सिंहः उनकी गिरफ्त में नहीं आये। 17 विद्राही सिपाही पकड़े गये उन पर मुकदमा चला और अपराध सिद्ध होने पर 22 जनवरी सन् 1858 ई. को पूरी सेना के सामने उन्हें फांसी दे दी गई। फांसी देने के साथ ही इनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई।

सुरेन्द्र साय का विद्रोह: -

सम्बलपुर रियासत (जो कभी दक्षिण कोसल का एक अंग था) के क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय के स्थान पर वहां की विधवा रानी मोहनकुमारी को गद्दी पर बिठा दिया किन्तु जन प्रतिरोध के कारण उसे पदच्युत कर बरपाली के अपने पिटतु नारायण सिंह को गद्दी पर

बिठा दिया गया जिससे सुरेन्द्र साय वचित रह गया। सुरेन्द्र साय जनता में लोकप्रिय थे और उन्हें जनता का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। इसी समय नारायण सिंह के सिपाही के द्वारा सुरेन्द्र सिंह के समर्थक लखनपुर के जमींदार बलभ्रद देव की हत्या कर दी गई जिससे क्रोधित होकर सुरेन्द्र साय ने रायपुर के किले में आक्रमण कर संबलपुर राजा समर्थक दुर्णय सिंह की हत्या कर दी। इस अपराध में सुरेन्द्र साय उनके भाई तथा चाचा को गिरफ्तार कर लिया गया।

जब 1857 की क्रांति पूरे देश में व्याप्त थी इसी बीच मौके का फायदा उठाकर सुरेन्द्र साय और उनके भाई जेल से फरार हो गये। सुरेन्द्र साय ने 2,000 सैनिकों को एकत्र कर सम्बलपुर किले पर आक्रमण किया। अंग्रेजों ने उसे धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया। फिर सुरेन्द्र साय अंग्रेजों को चकमा देकर भाग गये। 1857 की क्रांति में सुरेन्द्र साय के साथ कोलवीरा के जमींदार तथा कई जमींदारों ने उनका अनुशरण किया दानापुर में विद्रोह की खबर आते ही हजारीबाग की देशी पल्टन ने अपने तेवर दिखाये।

25 जनवरी 1864 को सुरेन्द्र व उनके साथियों को गिरफ्तार किया गया जिनमें भानु साय, दुर्दान्त साय, युव साय, मेदिनी साय आदि गिरफ्तार कर रायपुर के जेल भेज दिये गये। 9 वर्ष की कठोर यातना के पश्चात् 28 फरवरी 1884 को उनकी मृत्यु हो गई।

वनवासी अंचल (मानपल्ली आरपल्ली) में विद्रोह: -

1857 की महान क्रांति में वनवासी अंचल के दो जमींदार बापूराव और वेंकटराव का योगदान भी अविस्मरणीय है। मानपल्ली के जमींदार बापूराव तथा आरपल्ली के जमींदार अंग्रेजों को परेशान करने के लिए गुरिल्ला युद्ध का सहारा लिया और उनके ब्रिटिश अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया। जैसे ही रायपुर का विद्रोह शांत हुआ ये दोनों जमींदार आपस में मिलकर गोंड़ों मड़ियाओं की एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठा कर लिए और उन जमींदारों की जायजाद छिनकर जो उनका साथ नहीं दे रहे थे उन्होंने अपने साधनों को और अधिक बढ़ा लिया। अंग्रेजों ने आरपल्ली पर आक्रमण किया और वेंकटराव नहीं मिला वह बस्तर में जाकर शरण लिया। 1860 में बस्तर के राजा द्वारा उसे पकड़ कर अंग्रेजों को सौंप दिया गया। बाद में इन्हें आजीवन निर्वासन का दण्ड दिया गया।

इन विद्रोहों के अतिरिक्त 1857 के आस-पास उदयपुर, सरगुजा, बस्तर, कोरांचा, सुहागपुर, आदि वनवासी क्षेत्रों में अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह हुए। इस प्रकार सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम भारतीय इतिहास का निर्णायक मोड़ कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस आंदोलन में छत्तीसगढ़ की पिछड़ी जातियों व जनजातियों ने बढ़-बढ़ कर हिस्सा लिया जिसने कम्पनी के प्रशासन की जड़े हिला दी और अंग्रेजी प्रशासन को सुधार कार्य के लिए विवश कर दिया।

इन्होंने महारानी तपास्विनी के पति की मृत्यु के बाद जागीर संभाली, तथा अंग्रेजों के विरूद्ध लोगों को भड़काती थी। अंग्रेजों ने उसे एक किले में नजरबन्द किया। महारानी तपस्विनी ने 1857 की क्रांति में जन कर भाग लिया एवं बाद में क्रांति असफल होने पर वह नाना साहब के साथ नेपाल चली गयी। उनका निधन 1907 ई. में कलकत्ता में हुआ।

मुगल सल्तनत के अन्तिम शासक बहादुरशाह जफर की मलिका जीनत महल बेगम थी। बेगम में राज्य संचालन का गुण भी मौजूद था। कैप्टन एच.एन. डेविस के अनुसार मलिका जीनत महल अच्छी सेहत, अच्छी सूरत शक्ल वाली एक मध्यम कद की महिला थी। परदे के पीछे बैठ कर वह बादशाह को सलाह मशविरा दिया करती थी।

1857 की क्रांति में अनेक महिलाओं ने भाग लिया, जिसकी जानकारी देशवासियों को नहीं हो पायी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] फस्ट इंडियन वार आफ इंडिपेन्डेज 1857-1859, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्कों।
[2] विनायक दमोदर सावरकर द इंडियन वार ऑफ इंडिपेन्डेन्स 1947 का भारतीय संस्करण।
[3] दुर्गाशंकर प्रकाश सिंह, कुंवरसिंह एक अध्ययन।
[4] वृन्दावन लाल वर्मा, महारानी लक्ष्मी बाई
[5] रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय।
[6] रार्बटर्स पी.ई. हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया।